नींद से जागने का समय

(5:14-18)

हममें से अधिकतर लोग मसीहियों के रूप में अपने प्रकाश को चमकाने की ओर ध्यान नहीं देते हैं। लगता है हम अंधकार में सोए हुए हैं। संसार में सुसमाचार संदेश ले जाने और यीशु के नाम में लोगों की सेवा करने के लिए हमारे पास बेशुमार साधन और अवसर हैं; फिर भी ऐसा लगता है कि हम नींद में चल रहे हैं। लगता है जैसे पता ही न हो कि हम कहां जा रहे हैं। लगता है कि हमें इस बात का बहुत कम ज्ञान है कि हम कौन हैं और ज़्या हैं। हम परमेश्वर द्वारा हमें दिए गए कार्य को महत्व नहीं देते।

उदाहरण के लिए, सुसमाचार प्रचार के लिए हमारी लालसा कहां खो गई? प्रभु ने हमें आगे बढ़ने के आदेश दिए हैं: ''इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुज़्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ'' (मज़ी 28:19, 20क)। कैसे पता चले कि हम इस आज्ञा को महत्व देते हैं? हमें नींद से कौन जगा सकता है?

पहली सदी के मसीहियों को उनके समर्पण में सुस्त हो जाने पर किस बात ने जगाया था? वे आत्मिक रूप में सो रहे थे। इफिसियों 5 अध्याय में पौलुस ने उन्हें जगाया:

> ''हे सोने वाले जाग
> और मुर्दों में से जी उठ;
> तो मसीह की ज्योति तुझ पर चमकेगी'' (आयत 14)।

पौलुस ने सोने वालों को यह संदेश देकर जगाया:

> इसलिए ध्यान से देखो, कि कैसी चाल चलते हो; निर्बुद्धियों की नाईं नहीं पर बुद्धिमानों की नाईं चलो। और अवसर को बहुमोल समझो, ज़्योंकि दिन बुरे हैं। इस कारण निर्बुद्धि न हो, पर ध्यान से समझो, कि प्रभु की इच्छा ज़्या है? और दाखरस से मतवाले न बनो, ज़्योंकि इस से लुचपन होता है, पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ (5:15-18)।

पौलुस के शज़्दों से हमें कुछ विचार मिल सकते हैं।

बुद्धि का इस्तेमाल करें

जागने के लिए पौलुस की पुकार बुद्धि की पुकार है: ''इसलिए ध्यान से देखो, कि कैसी चाल चलते हो; *निर्बुद्धियों की नाईं नहीं पर बुद्धिमानों की नाईं चलो।* और अवसर को बहुमोल समझो, ज़्योंकि दिन बुरे हैं (5:15, 16)।

बीसवीं शताज़्दी में लोगों ने संसार के पूरे इतिहास की इतनी खोजें कीं तथा ज्ञान प्राप्त किया है जितना पिछली शताज़्दियों में कभी नहीं किया गया था। हमारे पास इतने तथ्य और आंकड़े हैं कि हम उनका इस्तेमाल भलाई का आरज़्भ करने के लिए कर सकते हैं, परन्तु हमारे संसार में बुद्धि की कमी है। बुद्धि का अर्थ तथ्यों का ज्ञान रखने से कहीं अधिक है। बुद्धि उस जीवन का जो परमेश्वर पर केन्द्रित है, एक ढंग है।

सुलैमान ''जीवन के मध्य के संकट'' से गुजरा था। उसने परमेश्वर से मुंह फेरकर परमेश्वर के बिना प्रसन्नता ढूंढ़ने का यत्न किया था। उसे लगा था कि जीवन में रोमांच भरने के लिए कुछ भी करने की कोशिश करने के लिए उसके पास इच्छा, धन, समय, ऊर्जा और अवसर सब कुछ है। सुलैमान बुद्धिमान बनने के बजाय मूर्ख बन गया। परमेश्वर के बिना प्रसन्नता की खोज ने उसकी हवा निकाल दी थी, उसे निराश किया और उसका मोह ज़ंग किया था। परमेश्वर के बिना संतुष्टि ढूंढ़ने के असफल प्रयासों की सुलैमान की डायरी के रूप में अब हमारे पास सभोपदेशक की पुस्तक है।

पौलुस के शज़्दों से हमें सुलैमान का अनुभव याद कराया जाता है। पौलुस ने कहा कि ''मूर्ख मत बनो।'' यदि आज पौलुस हमारे बीच होता तो वह कहता:

> ज़्या तुज़्हें लगता है कि तुज़्हें बहुत सा धन पाकर प्रसन्नता मिल सकती है?
> मूर्ख न बनो।
> ज़्या तुज़्हें लगता है कि वह घर खरीदकर जिसकी तुज़्हें बड़ी आवश्यकता है तुज़्हें प्रसन्नता मिल जाएगी?
> मूर्ख न बनो।
> ज़्या तुज़्हें लगता है कि उस सुन्दर लड़के या लड़की को पाकर तुम प्रसन्नता पा लोगे?
> मूर्ख न बनो।
> ज़्या तुज़्हें लगता है कि वह नौकरी पाकर तुज़्हें प्रसन्नता मिल जाएगी?
> मूर्ख न बनो।
> ज़्या तुज़्हें लगता है कि शराब से या नशों से तुज़्हें प्रसन्नता मिल जाएगी?
> मूर्ख न बनो।
> ज़्या तुज़्हें लगता है कि सारे अधिकार को त्यागकर और केवल वही करके जो तुम करना चाहते हो, प्रसन्नता मिल जाएगी?
> मूर्ख न बनो।[1]

जीवन पाने का या हर अवसर का अधिक से अधिक लाभ उठाने का एक ढंग है और वह है परमेश्वर के लिए जीना। *परमेश्वर के बिना हम जो भी कोशिश करते हैं, उससे हमें*

संतुष्टि नहीं मिल सकती।

नींद से जागने का अर्थ बुद्धिमान बनना है।

समझ का प्रयोग करें

नींद से जागने का अर्थ परमेश्वर की इच्छा के महत्व को समझना भी है : ''इस कारण निर्बुद्धि न हो, पर ध्यान से समझो, कि प्रभु की इच्छा ज़्या है ?'' (5:17)। जॉन स्टॉट की टिप्पणी है, ''जीवन में परमेश्वर की इच्छा को जानने और उसे पूरा करने से बढ़कर कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं है।''[2]

मसीही लोगों के लिए नींद से जागकर परमेश्वर की इच्छा के महत्व को समझने का यही समय है। हमें इस बात का अहसास होना चाहिए कि हम ऐसे संसार में रहते हैं जो परमेश्वर की इच्छा से आगे निकल गया है। संसार परमेश्वर के विरुद्ध है। यह परमेश्वर की इच्छा के अनुसार सुर मिलाने से इन्कार करता है।

हर रोज हमें परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध चलने के नये-नये संदेश मिलते हैं, हर उम्र के मसीही भी उनसे प्रभावित होते हैं। हम सब पर उस समाज का दबाव लगता है जो परमेश्वर के साथ कदम नहीं मिलाता। हम में से कइयों को नींद से जागकर मनोरंजन के अपने संसाधनों की समीक्षा करनी होगी। हमें जागकर उन किताबों की, जिन्हें हम पढ़ते हैं, उन स्थानों की, जहां हम जाते हैं और उस ढंग की,जिसमें हम अपना समय नष्ट करते हैं समीक्षा करनी होगी। हमें परमेश्वर की इच्छा के अनुसार जागना होगा।

शक्ति का प्रयोग करें

आत्मिक रूप से सोने वालों को जगाने के लिए तीसरी कुंजी शक्ति है। कलीसिया की शक्ति केवल एक ही स्रोत से आती है और वह स्रोत है परमेश्वर का पवित्र आत्मा। इफिसियों 5:18 कहता है, ''और दाखरस से मतवाले न बनो, ज़्योंकि इससे लुचपन होता है, पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ।''

शराब पिए हुए किसी व्यक्ति को देखकर हम कहते हैं कि उसे ''चढ़ गई है।'' उसकी चाल अलग होती है, उसका बात करने का ढंग अलग होता है, वह सोचता अलग ढंग से है और लोगों के साथ उसका व्यवहार एक सामान्य व्यक्ति से अलग होता है। शराबी व्यक्ति दूसरों से अलग होता है।

पौलुस ने मसीही लोगों को अलग व्यक्ति होने अर्थात परमेश्वर के पवित्र आत्मा के नशे में होने के लिए कहा। आत्मा हमारे जीवनों को परमेश्वर के वचन के द्वारा परिपूर्ण करना चाहता है। परन्तु, हमारे पाप, ढिठाई और मन फिराने से इन्कार के कारण हमसे आत्मा की शक्ति छिन सकती है। जब हम परमेश्वर के सामने स्पष्ट और उसके वचन के प्रति आज्ञाकार होते हैं, तो पवित्र आत्मा हमें परिपूर्णता देता है। उसकी सामर्थ हमारे जीवनों से निकलती है।

फिर, हम आत्मा से परिपूर्ण कैसे हो सकते हैं ? पहले तो, *परिपूर्ण होने की इच्छा करें।* यदि हम में उसकी शक्ति पाने की इच्छा नहीं होगी तो आत्मा हमारे जीवनों को सामर्थी नहीं

बनाएगा। हम पढ़ते हैं:

> यीशु खड़ा हुआ और पुकार कर कहा, यदि कोई पियासा हो तो मेरे पास आकर पीए। जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्र शास्त्र में आया है उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेंगी। उस ने यह वचन उस आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करने वाले पाने पर थे (यूहन्ना 7:37ख-39क)।

हमारे जीवनों में आत्मा की सामर्थ के लिए जागना यीशु की अर्थात उसके जैसे बनने के अवसर की पेशकश की इच्छा करने से आरज़्भ होता है। वचन के द्वारा हमें यीशु जैसा बनाना आत्मा की विशेषता है, परन्तु ऐसा वह तभी करता है, जब हमारी इच्छा होती है।

दूसरा, *परमेश्वर के वचन को जानकर* आत्मा से परिपूर्ण होने की पुकार पर ध्यान देना आवश्यक है: ''मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो'' (कुलुस्सियों 3:16)। इफिसियों 5:18 बताता है कि आत्मा को हमें परिपूर्ण करने की अनुमति दें। आत्मा से परिपूर्ण होने के लिए आवश्यक है कि हम परमेश्वर के वचन को जानें और वह वचन हममें वास करे। हमारे जीवनों के आत्मा से परिपूर्ण होने से हम में परमेश्वर का वचन रहता है। आत्मा और वचन मिलकर काम करते हैं।

तीसरा, आत्मा से परिपूर्ण होना अर्थात, *जीवन शैली के लिए यीशु के अधीन होना* आवश्यक है। आत्मा से परिपूर्ण होने की कुंजी ''यीशु को मैं सब कुछ देता'' गीत के शज़्दों में मिलती है जिसे हम अज़्सर गाते हैं। हर घड़ी, हर पल ये शज़्द हमारे लक्ष्य बन जाने से आत्मा हमारे जीवनों को परिपूर्ण कर देता है। हम नींद में चलना छोड़ देंगे। हम चौकसी से, आत्मा के साथ और उसकी सामर्थ से आगे कदम बढ़ाएंगे।

सारांश

ज़्या आप नींद में चलने वाले मसीही हैं? फिर से बुद्धि, समझ और आत्मा से परिपूर्ण होने की सामर्थ की ओर लौटें, ऊपर से मिली बुद्धि का इस्तेमाल करने, प्रभु की इच्छा को समझकर उसे मानने, आत्मा से परिपूर्ण होकर मिलने वाली शज़्ति की इच्छा करके उसे पाने का समय यही है। परमेश्वर चाहता है कि उसकी कलीसिया जागती रहे।

यदि आप मसीही नहीं हैं, तो अभी समय है कि आप जागें और देखें कि मसीह ने आपके लिए ज़्या किया है। अपने पुराने जीवन से मन फिराकर उसके पास लौट आएं और अपने पापों को धोने के लिए बपतिस्मा लें। संसार में मसीह की ज्योति को चमकाने के लिए बपतिस्मे के पानी में से बाहर आएं।

टिप्पणियां

[1]मैज़्स एंडर्स, *द गुड लाइफ: लिविंग विद मीनिंग इन ए ''नैवर-इनफ़''* वर्ल्ड (डैलस: वर्ड पज़्लिशिंग, 1993), 147-48. [2]जॉन आर. डज़्ल्यू. स्टॉट, *द मैसेज ऑफ़ इफिसियंस: गॉड'स न्यू सोसायटी,* द बाइबल स्पीज़्स टुडे, सामा. संस्क. जॉन आर. डज़्ल्यू. स्टॉट (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1979), 203.